हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. II sem

विषय — नाटकों का विकास का शेष - भाग

सामसमायिक नाटकों में 'श्री निवासदास' का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने 'तृप्ता', संवरण, 'प्रह्लादचरित' और 'संयोगिता स्वयंवर' आदि नाटकों की रचना की। 'श्री बद्री नारायण चौधरी के 'भारत सौभाग्य' से कुछ आशा का संचार तो हो गया था, किन्तु क... की दृष्टि से यह नाटक महत्वपूर्ण नहीं है। 'दे... नन्दन खत्री' का 'सीताहरण', 'ज्वाला प्रसाद' का सीता स्वयंवर आदि प्रमुख हैं। इस यु... नाटकों की रचना का मूल उद्देश्य मनोरंजन... साथ ही जन-मानस को जाग्रत करना, आ... पैदा करना था। सत्य, न्याय, त्याग, उ... आदि मानव-मूल्यों के प्रति आस्था - करना ही भारतेन्दु युग के नाटकों की

समय की गति के साथ नाटकों के क्रम में भी गति आई। यह अध्याय 'द्वितीय उत्थान' के नाम से जाना जाता है। इस समय 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर' के नाटकों का अनुवाद हो रहा था। अनुवा के अतिरिक्त कुछ मौलिक नाटकों की रचना हुई, जि साहित्यिकता के अतिरिक्त पारसी रंगमंचों पर भी ध्यान दिया जाता था। 'गुप्त' जी के 'चन्द्रहास' आदि इसी कोटि की रचनाएँ हैं।

सुधारवादी द्विवेदीयुग वस्तुगत एवं शैली पूर्णता की उपलब्धि का युग था। भारतेन्दु यु सीमाओं से उबर 'बदरीनाथ भट्ट' 'मारवनलाल च ने अनेक महत्वपूर्ण मौलिक नाटकों की रचना की। 'द्विवेदीयुगीन नाटकों में राधाचरण, ब्रज सहाय, गंगा प्रसाद गुप्त, वृन्दावन लाल व इत्यादि प्रमुख हैं।

'जयशंकर प्रसाद' भारतेन्दुकालीन रा चेतना को काफी विकसित किया। उनके ना में पुनर्जागरण एवं स्वच्छन्दतावाद में प्रह वैयक्तिकता, भावुकता, नियतिवृत्ता आदि की

इनके नाटकों में 'राज्यश्री', अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी आदि प्रमुख हैं।

प्रसाद नाटकों के क्षेत्र में युगान्त परिवर्तन लेकर उपस्थित होते हैं। यथार्थ दिखाने के लिए उसमें अन्तर्द्वन्द्वों की योजना की। उन्होंने अपने नाटकों में एक साहित्यिक भाषा गढ़ी। इस काल के अन्य प्रमुख नाटककार 'जगन्नाथ प्रसाद 'कौशिक', 'सुदर्शन' है। समस्या नाटक के सूत्रपात का श्रेय भी प्रसाद को जाता है।

प्रसाद के बाद हरेकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मी नाराय मिश्र और भुवनेश्वर सक्रिय दिखाई दिए। हरेकृष्ण प्रे सामप्रदायिक एकता का लक्ष्य लेकर चले। इनके प्रसि नाटकों में रक्षाबन्धन, शिवसाधना, प्रतिशोध इत्यादि लक्ष्मीनारायण मिश्र और भुवनेश्वर ने पश्चिमी नाट्य आन्दोलन से प्रभाव ग्रहण कर बुनियादी नाटकों की रचना की।

मोहन राकेश ने हिन्दी नाटक को एक नया मोड़ दिया। उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन में साहित्यिक गुणों के प्रतिष्ठित करने का स प्रयास किया। असंगत नाटकों की परम्परा मु

ने चलाई, जिसे 'लक्ष्मी कांत वर्मा' का अपना-अपना
पूरा तथा राजकमल चौधरी का 'मगन-स्तूप' का
एक अध्याय स्तम्भ इसी परम्परा का नाटक है।
आठवें दशक में व्यवस्था विरोधी नाट्य लेखन
से मार्क्सवादी रचनाकार जुड़ते हैं। भीष्म साहनी इस
काल के मुख्य नाटककार हैं। इनके प्रमुख नाटक 'कबीरा खड़ा
बाजार में' है। यह नाटक नुक्कड़ नाट्य आन्दोलन से
जुड़कर अधिक लोकप्रिय हुआ। नुक्कड़ नाटक कहीं और कभी
भी खेला जा सकता है। पर्दा, मंच एवं प्रकाश व्यवस्था
की इसमें आवश्यकता नहीं है।
आज हिन्दी नाटक के क्षेत्र में एकांकी, रेडियो
'फीचर', ध्वनि-नाट्य, नृत्य-नाटक, टी.वी. रिपोर्ता
आदि कई रूपों में नितान्त अभिनव किन्तु सफल
प्रयोग किया जा रहा है और उसके स्वर्णिम भवि
के प्रति हम आस्थावान हैं।
हिन्दी नाटक और रंगमंच कई उत
कुरे दौर से गुजरे हैं, लेकिन अपनी संस्कृ
और परम्परा से उसका संबंध कभी नहीं टू
हिन्दी रंगमंच आज पूरे भारत का प्रतिनिधि
रंगमंच है।